इसलिए वे अक्सर हरवाही बंद कर उस भट्ठे से सिर पर ईंटें लादकर स्कूल में रख देते। वे मिट्टी का गारा भी बनाते। पूरा दिन इन्हीं कामों मे वे बिना किसी मजदूरी के लगा देते थे। उनका ऐसा व्यवहार अत्यंत परोपकारी था, किंतु माँ के प्रकरण से उत्पन्न घृणा मेरे अंदर बढ़ती ही गई।

अथवा

आरंभ में प्रायः सभी देशों के समाज में स्त्री को कुछ स्पृहणीय स्थान नहीं दिया परंतु सभ्यता के विकास के साथ – साथ स्त्री की स्थिति में भी परिवर्तन होता गया। वास्तव में स्त्री की स्थिति समाज का विकास नापने का मापदंड कही जा सकती है। नितांत बर्बर समाज में स्त्री पर पुरुष वैसा ही अधिकार रखता है जैसा वह अपनी अन्य स्थावर संपत्ति पर रखने को स्वतंत्र है। इसके विपरीत पूर्ण विकसित समाज में स्त्री पुरुष की सहयोगिनी तथा समाज का अवश्यक अंग मानी जाकर माता तथा पत्नी के महिमामय आसन पर आसीन रहती है।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 10×3=30

(i) स्त्री अस्मिता की दृष्टि से 'सात भाइयों के बीच चंपा'

(ii) 'अछूत की शिकायत' कविता में दलित चेतना

(iii) 'सलाम' कहानी का प्रतिपाद्य

(vi) क्रांतिवीर मदारी पासी का व्यक्तित्व

(v) 'सोनवा का पिंजरा' कविता की संवेदना

(vi) पाश्चात्य स्त्री विमर्श का स्वरूप

***

 1500

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6766** **I**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi DSE - I**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय नारीवाद के विकास – क्रम में दलित स्त्रीवाद का स्वरूप समझाइए। 15

अथवा

आदिवासी अस्मिता के संकटों का संज्ञान लेते हुए आदिवासी साहित्य की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

2. किन्हीं **तीन** अंशों की सप्रगंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

P.T.O.

(क) बारात ठहराने के लिए स्कूल का बरामदा ही मिल पाया था। प्रधान जी ने स्कूल खोल देने की हामी तो भर दी थी लेकिन ऐन वक्त पर हेडमास्टर कहीं रिश्तेदारी में चले गए थे। काफ़ी भाग - दोड़ के बाद भी चाबी नहीं मिली थी। आखिर हारकर बारात को बरामदे में ही ठहराना पड़ा था। स्कूल में जो हैंडपंप था, एक रात पहले किसी ने उसका हत्था और वाल्व भी खोल दिए थे। पीने के पानी का कोई और इंतजाम वहाँ नहीं था। बड़ी मुश्किल से दो मिट्टी के घड़े ही मिल पाए।

अथवा

इस दौरान गोविंद गुरु ध्यानावस्था से निकल आए थे और पद्मासन खोलते हुए उन्होंने भरत्या और गनी की बात सुन ली थी। गोविंद गुरु बोले - अरे भरत्या, तू गया नहीं ? और सुन, ये तेरी भाभी जगंल के जीवन से भली - भांति परिचित हैं। तेरे को डरने की जरूरत नहीं है। यह सारा काम कर लेती है। और तू सुना, घर में सब ठीक है न, तेरे एक बेटा एक बेटी है न।

(ख) मेरे बेटे के साथ
अपने बेटे को भेजो
दिहाड़ी की खोज में।
और अपनी बिटिया को
हमारी बिटिया के साथ
भेजो कटाई करने
मुखिया के खेत में।

शाम को थक कर
पसर जाओ धरती पर
सूँघो खुद को
बेटे को
बेटी को
तभी जान पाओगे तुम
जीवन की गंध को
बलवती होती है जो
देह की गंध से।

अथवा

क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री - दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा ?
अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में ......!

(ग) आगे चल कर पिताजी के प्रति मेरी घृणा विकराल रूप लेती चली गई। इसी समय स्कूल में कुछ नए कमरे बनाए जा रहे थे। स्कूल से थोड़ी दूर पर ईंट का भट्टा था जहाँ से ईंटें लाकर इमारत बनाई जा रही थी। मेरे पिता जी कहते थे कि स्कूल बनाना पुण्य का काम है,